विश्व हिन्दी न्यास

World Hindi Foundation, Inc.

न्यास समाचार वर्ष 8 अंक 4 नवम्बर-दिसम्बर सन् 2,007 संपादक - राम चौधरी

न्यास के नए दाता सदस्य

डा. इन्दु लाल (पुकिप्सी न्यू यार्क से)

न्यास के नये आजीवन सदस्य

न्यू यार्क के पुकिप्सी क्षेत्र से: रवि एवं लता हाटचंदानी, नोएल एवं मंजुरिमा ब्रिन्द, सुधीर एवं गीता देसाई, गोपाल एवं हेमलता गुप्ता, महावीर एवं रेखा सिंह, राकेश एवं अनीता मेहता।

न्यास के चुनाव

चुनाव समिति के अध्यक्ष, श्री अनिल अगरवाल के अनुसार निदेशक मंडल के निम्नलिखित सदस्य दो वर्ष के लिए निर्विरोध चुन लिए गए हैं, उनका कार्य काल 31 दिसम्बर, सन् 2009 तक होगा। *वेद चौधरी, पद्मिनी प्रसाद, लक्ष्मी प्रकाश शर्मा, अंचला सोब्रिन तथा श्याम शुक्ला।*

अधिवेशन का हिसाब

Income

Sponsorships & Donations	$18,000.00
Ticket Sales (13 tickets)	$455.00
Total Income	*$18,455.00*

Expenses

Food	$5,501.41
Facility/ Venue Rental	$2576.50
Bal Hindi Jagat (Souvenir)	$1464.47
Mailing	$610.88
Sound System/Video	$692.97
Miscellaneous Expenses	$393.61
Total Expenses	$11,239.84
Net Savings	**$7,215.16**

न्यास का सातवां अधिवेशन

न्यास का दो दिवसीय सातवां अधिवेशन 6-7 अक्टूबर, 2007 को वापिंगर्स फ़ाल्स, न्यू यार्क में सम्पन्न हुआ। इसे, विश्व हिन्दी न्यास के हडसन वैली हिन्दी स्कूल, तथा वापिंगर्स सेन्ट्रल स्कूल डिस्ट्रिक्ट, द्वारा प्रायोजित (sponsor) किया गया था। अधिवेशन का आधार-वाक्य था - *हिन्दी - दर्शन और दिशा। अधिवेशन को सफल बनाने का श्रेय, अधिवेशन की संचालक, प्रोफ़ेसर सीमा खुराना, धनसंचय समिति के अध्यक्ष डा. सुनील खुराना, बाल हिन्दी जगत की सम्पादक श्रीमती अंचला सोब्रिन, हडसन वैली शाखा की निदेशक श्रीमती शर्मिष्ठा बनर्जी, न्यास की निदेशक श्रीमती पद्मिनी प्रसाद तथा उनके अनेक सहयोगियों, विशेषत: मधु वर्मा, गिरिजेश पाराशर, चिरश्री लाहिरी, चन्द्रिका प्रसाद, अनिल गर्ग, संगीता दवे, अनुराधा चंदर तथा कविता नटराजन को है।*

अधिवेशन के दो अधिवक्ता थे, मुख्य अतिथि, माननीय श्रीमती रीनत संधु, न्यू यार्क के भारतीय कौन्सलावास में शिक्षा कौन्सल, तथा विशिष्ट अतिथि, श्री टॉमस स्टैला, वापिंगर फ़ाल्स स्कूल डिस्ट्रिक्ट के प्रशासनिक निदेशक। अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में 140 व्यक्ति उपस्थित थे। पहले दिन के कार्यक्रम थे, उद्घाटन समारोह, बाल हिन्दी साहित्य गोष्ठी, भारत की अनेकता में एकता के दर्शन, कहानी मंच तथा एक विराट कवि सम्मेलन।

उद्घाटन समारोह का पहला कार्यक्रम था, *मोनिका निष्ठा सोब्रिन, निकी देसाई एवं जीनल गान्धी* द्वारा दो प्रार्थनाओं, मंगलम् तथा ए. आर. रहमान द्वारा रचित वंदे मातरम का कथक प्रस्तुतीकरण। श्रोताओं ने खड़े होकर करतल ध्वनि से बच्चों का हार्दिक स्वागत किया। इस कार्यक्रम कासकारात्मक वातावरण दूसरे दिन तक बना रहा।

उद्घाटन समारोह के पश्चात बाल साहित्य गोष्ठी की गई। इस का उद्देश्य था, हिन्दी के कुछ श्रेष्ठ साहित्यकारों की कविताओं तथा कहानियों की प्रस्तुति द्वारा विद्यार्थियों में हिन्दी साहित्य के प्रति लगाव पैदा करना। गोष्ठी में 5 वर्ष से 13 वर्ष की आयु के 17 बच्चों (15 हडसन वैली स्कूल तथा 2 मार्लबोरो स्कूल) ने भाग लिया। *(साहित्यकारो के नाम के नाम के बाद कोष्ठक में उनकी रचनाओं का नाम दिया गया है।) सियाराम शरण गुप्त (समय), सोहनलाल द्विवेदी (हिमालय), श्रीनाथ सिंह (सीखो), हरवंश राय बच्चन (चल मरदाने), द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (वीर तुम बड़े चलो, भारत प्यारा), प्रयाग शुक्ला (पतंग, पप्पू के रसगुल्ले), बाल स्वरूप राही (कौन)। कहानियां, सुदर्शन (हार की जीत), सन्तराम वास्य (अभ्यास का महत्व), रबीन्द्रनाथ ठाकुर (क़ाबुलीवाला), तथा भारतेन्दु हरिश्चंद्र (अंधेर नगरी)।* पाठ करने वाले विद्यार्थियों के नाम हैं - *रोनित एवं ऋषभ छबरा, अनन्य एवं सोहम पान्डे, पल्लवी यनापू, शिमोना लाहिरी, सहाना नटेसन, अनुभव शंकर, सुश्रुत एवं सुव्रत इरुवन्ती, नीपा, आशना एवं कनिका गुप्ता, राजन खुल्लर, करीना वोरा, तथा श्रवम एवं सोनिका मेहता।* बच्चों के कार्यक्रमों की तैयारी में हिन्दी शिक्षकों ने एक महीने से अधिक समय लगाया था।

अगले कार्यक्रम का विषय था - *भारत की अनेकता में एकता के दर्शन।* एकता को दर्शाने के लिए भारत के पांच प्रदेशों, तामिलनादु, बंगाल, उड़ीसा, राजस्थान एवं पंजाब की सांस्कृतिक तथा राजनैतिक घटनाओं को चित्रित किया गया। पांचों प्रदेशों के कार्यक्रमों का एक ही क्रम था, लोकनृत्य तथा लोकसंगीत, के पश्चात विवाह संस्कार की झांकी दिखाना। पहला कार्यक्रम तामिलनादु के बारे में था। जब पार्श्व संगीत के मधुर स्वरों से मंत्रमुग्ध होकर श्रोतागण गुनगुना रहे थे, कविता पाठ करते हुए, एक युवा महाकवि, *भरतियार*, सहसा मंच पर प्रकट हुए। कविता में भारत माता की अवधारणा (concept) को चित्रित किया गया था: भारत माता का जन्म कब हुआ, यह कोई नहीं जानता है। उसके तीस करोड़ मुख हैं, वह 18 भाषायें बोलती है, परन्तु उसकी एक ही आत्मा है। *(भरतियार के समय भारत की जनसंख्या 30 करोड़ थी।)*

जब यह दृश्य चल रहा था, अचानक, मंच पर रंगीन साड़ियों से सज्जित बंगाली महिलाओं के बीच, सफ़ेद दाढ़ी वाले नोबल पुरस्कार विजेता, *गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर* उपस्थित हुए। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सर की उपाधि दी थी, उन्होंने उसे जलियांवाला बाग़ हत्याकांड के विरोध में सरकार को लौटा दिया था। दुर्गापूजा तथा बंगाली विवाह की रस्मों के चलते, मंच पर राजस्थान का परिदृश्य आजाता है, *लोकनृत्य तथा मीराबाई के भजन, तथा राजस्थानी विवाह* की परंपराओं का चित्रण होता है, और तत्क्षण, *जगन्नाथपुरी में जगन्नाथ, बालभद्र, तथा सुभद्रा की कहानी,* तथा वैवाहिक परंपराएं, मंच पर छा जाती हैं। अन्त में *पंजाबी संगीत तथा गिद्दा नृत्य* के साथ-साथ पंजाब के *अमर शहीद भगत सिंह* मंच पर प्रकट होते हैं, सहसा इन्क़लाब ज़िन्दाबाद के नारों से सभागार गूंज उठता है। मंच पर एक भावना व्याप्त हो जाती है: हमारी कोई भाषा हो, हम किसी भी प्रदेश से हों, हमारा कोई धर्म हो, हम सब भारतीय मूल के हैं।

इस कार्यक्रम में लगभग 70 व्यक्तियों ने भाग लिया था, आश्चर्यजनक रूप से एक के बाद दूसरे कार्यक्रम अविराम मंच पर होते रहे। अन्त में सभी कलाकार, मंच पर उपस्थित हुए। *इसके पश्चात, दोनों अतिथियों, माननीय रीनत सन्धु तथा श्री टामस स्टैला ने न्यास के हिन्दी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के कार्य की सराहना की, तथा श्रीमती सन्धु ने न्यास के दाता सदस्यों को उनके अनुदान के लिए सम्मान फलक प्रदान किये।*

जलपान के पश्चात *कहानी मंच* की प्रस्तुति की गई। कुछ वर्षों पहले, विख्यात अभिनेता, नसीरुद्दीन शाह ने, इस्मत चुगताई की कहानियों से इस परंपरा को लोकप्रिय बनाया था। पहले, *पद्मिनी प्रसाद* के संयोजन से दो कहानियों की प्रस्तुति की गई, पहले कहानीकार थे, *सियाराम शरण गुप्त, शीर्षक था काकी।* एक छोटे बालक की मां, *काकी*, का स्वर्गवास होगया था, बच्चा उसे जीवित करना चाहता था. *शर्मिष्ठा बनर्जी* ने मंच पर बालक की कोमल भावनाओं का सजीव चित्रण किया। दूसरी कहानी, *शक, की लेखिका, तथा प्रस्तोता थीं, सीमा खुराना।* शक, अमेरिका में जन्मी, पली, भारतीय मूल की एक युवा लड़की की कहानी है, दो संस्कृतियों की खीच-तान में उसे अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। फिर, रविवार को आयोजित की जाने वाली साहित्य गोष्ठी के पूर्वावलोकन (preview) में दो कहानियों का मंचन हुआ, पहली, भगवतीचरण वर्मा की हास्यजनक कहानी, प्रायश्चित, जो सामाजिक अंधविश्वासों के बारे में है, *अंचला सोब्निन* ने इसका मार्मिक पाठ कुशलतापूर्वक किया। दूसरी प्रस्तुति में, *अनुराधा चंदर ने* अपनी आत्मकथा के हास्यजनक प्रसंग पढ़कर सुनाए।

रात्रि भोज के पश्चात, न्यास के सचिव, *श्री कैलाश शर्मा* के संचालन में एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। निम्नलिखित कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया: *अनिल प्रभा कुमार, लक्ष्मी शर्मा, अनुराधा चंदर, महेश कुमार शर्मा, सीमा खुराना, सरिता मेहता, मधु वर्मा, मनमोहन माहेश्वरी, पुष्पा खुराना, कैलाश शर्मा, पूर्णिमा देसाई, रामबाबू गौतम, देवी नंगरानी एवं सुमन वरदान।*

दूसरे दिन, रविवार 7 अक्टूबर, सन् 2007 के प्रमुख कार्यक्रम थे, हिन्दी शिक्षण कार्यशाला, साहित्य गोष्ठी, तथा न्यास की आम सभा तथा निदेशक मंडल की बैठक। हिन्दी शिक्षण कार्यशाला में न्यास के हिन्दी स्कूलों के अतिरिक्त न्यूयार्क से *पूर्णिमा देसाई, तथा सरिता मेहता, तथा देवी नंगरानी* ने अपने हिन्दी स्कूलों के हिन्दी शिक्षण की चर्चा की। मार्लबोरो के शाखा निदेशक, *डा. बिशन अगरवाल* ने बताया कि मार्लबोरो हिन्दी स्कूल की वेबसाइट पर स्कूल के उद्देश्यों तथा सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी जाती है। इससे विद्यार्थियो के अभिभावकों को मालूम रहता है कि विद्यार्थियों को कितना होम वर्क दिया गया है। मार्लबोरो हिन्दी स्कूल में 11 शिक्षक हैं, लगभग 100 विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। डा. अग्रवाल के पश्चात हडसन वैली हिन्दी स्कूल की शिक्षक *अंचला सोब्निन* ने अपने हिन्दी शिक्षण के अनुभवों के बारे में कहा कि वे इस बात का ध्यान रखती हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी कक्षा समाप्त होने के अन्त तक कुछ सीख कर जाए। *उन्होंने निकट भविष्य में हिन्दी को एक विदेशी भाषा के तौर पर पढ़ाने के लिए, अमेरिकन कौन्सिल की नियमावली तथा पाठ्यक्रम के अनुरूप, हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें लिखने की चर्चा की। इन पाठ्य पुस्तकें के आधार पर अन्य हिन्दी स्कूलों*

के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा सकता है। अंचला के पश्चात *पद्मिनी प्रसाद, मधु वर्मा, गिरिजेश पाराशर एवं शर्मिष्ठा बनर्जी तथा येल विश्वविद्यालय से सीमा खुराना ने* अपने हिन्दी शिक्षण के अनुभवों की चर्चा की।

लंच के पश्चात साहित्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें *अनुराधा चंदर* ने अपनी आत्मकथा से, तथा *अनिल प्रभा कुमार, लक्ष्मी शर्मा तथा महेश कुमार* ने स्वरचित कहानियों की रोचक प्रस्तुति की। *निदेशक मंडल तथा उपस्थित सदस्यों ने अधिवेशन के आयोजकों भूरि-भूरि की प्रशंसा की।*

प्रेरक प्रसंग

बफ़लो (न्यू यार्क) के एक निवासी, भारतीय मूल के एक तंत्र-शल्यक (neurosurgeon), 81 वर्षीय *डा. कुमार बहुलेयान,* चर्चा का विषय बन गए हैं। उनका जन्म केरल के एक छोटे गांव, चेम्मानकारी, ज़िला कोट्टायम के एक निर्धन अछूत परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी जन्मभूमि में 20 मिलियन डालर की लागत से एक तंत्र-शल्यन अस्पताल (neurosurgery hospital), स्वास्थ्य क्लीनिक आदि की स्थापना की है।

डा. बहुलेयान प्रारम्भ से कुशाग्र बुद्धि के थे, मद्रास मेडीकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करके वे तंत्र-शल्यन (neurosurgery) में प्रशिक्षण के लिए एडिनबरा गए, परन्तु भारत लौटने पर उन्हें उचित नौकरी न मिली, वे भारत छोड़कर, अल्बनी (न्यू यार्क) के मेडीकल कालेज में काम करते हुए, सन् 1973 में बफ़लो विश्वविद्यालय के मेडीकल कॉलेज में आए। उनकी पत्नी इन्दिरा कार्ता बफ़लो में एक व्याधि-विज्ञानी (पैथोलोजिस्ट) हैं। सन् 1989 में दम्पत्ति ने बहुलेयान परोपकारी न्यास (Bahuleyan Charitable Trust), सन् 1993 में दक्षिण भारत में बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं के उपचार हेतु एक चिकित्सालय, तथा सन् 1996 में भारत-अमेरिका मस्तिष्क एवं मेरुदंड केन्द्र (Indo-American Brain and Spine Center) स्थापना के पश्चात, सन् 1999 में वे सेवा निवृत्त हुए।

कुछ वर्षों पहले उनके पास एक हवाई जहाज़, एक रोल्स रॉइस, 5 मर्सडीज़ कारें थी। उन्होंने इनका परित्याग कर दिया है, वे आधे साल अमेरिका तथा आधे साल भारत में रहते हैं, भारत में वे साइकिल पर चलते हैं, प्रति दिन कम से कम एक ऑपरेशन करते हैं। *वे कहते हैं, जन्म के समय मेरे पास कुछ नहीं था, मैंने अपनी जन्मभूमि में शिक्षा पाई है, मेरा कर्तव्य है कि मैं सभी कुछ अपनी जन्मभूमि को समर्पित कर दूं।*

सम्मान

न्यास के लिए यह गौरव तथा हर्ष का विषय है कि विज्ञान प्रकाश के सम्पादक मंडल के दो सदस्यों को भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया जा रहा है।

सम्मानित होने वाले पहले व्यक्ति हैं, विज्ञान प्रकाश के स्थानीय सम्पादक, श्री देवेन्द्र सिंह मेवाड़ी। 17 दिसम्बर, सन् 2007 को उन्हें भारत सरकार के मानव विकास मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का आत्माराम पुरस्कार, भारतीय राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा प्रदान किया जायगा। राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में उन्हें एक लाख रुपये की राशि, ताम्र फलक तथा शाल से विभूषित किया जायगा। श्री मेवाड़ी को अनेक सम्मान, उदाहरणतः नेशनल कौन्सिल ऑफ़ साइन्स एन्ड टैक्नोलोजी कम्युनिकेशन (NCSTC) पुरस्कार, सूचना एवं सूचना प्रसारण मंत्रालय का, हरिश्चन्द्र हिन्दी बाल साहित्य सम्मान प्रदान किए गए हैं।

सम्मानित किये जाने वाले दूसरे व्यक्ति हैं, विज्ञान तथा प्रौद्योतिकी मंत्रालय में विज्ञान प्रसार विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक *डा. सुबोध महन्ती।* उन्होंने वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय से सन् 1978 में एम. एससी, तथा सन् 1982 में पी. एचडी उपाधियां प्राप्त की, और फिर विश्वविद्यालय के इन्स्टीट्यूट आफ़ मेडीकल एवं बाइलौजिकल साइन्सिज़ में अनुसंधान कार्य करने के पश्चात विज्ञान प्रसार में कार्यरत हुए। इस वर्ष नवम्बर में उन्हें भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा, *भौतिकी के इतिहास की एक झलक* नामक पुस्तक के लिए *डा. मेघनाद साहा पुरस्कार* प्रदान किया गया है। वैज्ञानिक विषयों पर उनकी 170 से अधिक लोकप्रिय रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्हें अनेक सम्मानों, उदाहरणतः नेशनल कौन्सिल ऑफ़ साइन्स एन्ड टैक्नोलोजी कम्युनिकेशन (NCSTC) द्वारा विभूषित किया गया है।

मार्लबोरो हिन्दी विद्यालय - प्रस्तुति डा. वेद चौधरी

17 नवम्बर, 2007 को मार्लबोरो में न्यास के हिन्दी विद्यालय के विद्यार्थियों, अभिभावकों, तथा शिक्षकों ने मिलकर दिवाली का उत्सव मनाया। *उत्सव में एक नया प्रयोग किया गया : सब लोगों ने मिलकर ऐसे पोस्टर तैयार किए जिन में दीपावली के अतिरिक्त अन्य त्योहारों के बारे में सूचना दी गई थी।* पोस्टरों के विज्ञापनों द्वारा उत्सव का पूरा ख़र्चा निकालने के बाद, कुछ धन स्कूल के संचालन के लिए बच गया। *इस प्रयोग का श्रेय स्कूल के प्राचार्य डा. बिशन अगरवाल को है। उत्सव के मुख्य अतिथि थे, फ़्रीहोल्ड रीजनल हाई स्कूल के सुपरिन्टेडेन्ट, श्री जेम्स वासर।* डा. अगरवाल ने श्री वासर तथा विद्यार्थियों के अभिभावकों का स्वागत किया, तथा विद्यालय के बारे में जानकारी दी। *डा. वेद चौधरी ने श्री वासर से अनुरोध किया कि अगले वर्ष से इस क्षेत्र के स्कूलों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था की जाय।*

न्यास की ओर से नए वर्ष की मंगल कामनाएं।

World Hindi Foundation, Inc.

A Tax-Exempt Charitable &
Educational Foundation (ID 31-1679275)
Website: www.worldhindifoundation.org

Board of Directors

Executive Director : Ram Chaudhari
54 Perry Hill Road, Oswego, NY, 13126
Ph: (315) 343-3583 (R), (315) 312-2676 (W)
Fax: (315) 312-5424 Email: chaudhar@oswego.edu
Secretary: Kailash Sharma
140-24G, Donizetti Pl., Bronx, NY 10475
Ph: (718) 379-5449 (R), 718) 595-5190 (W)
Email: KCSharma@aol.com
Treasurer: Pradeep Agarwal
3611 H. Hudson Pkwy #9A, Riverdale, NY 10463
Ph. (718) 548-7532, Email: pnagarwal@cs.com
Shashi Agarwal (NJ) (732) 206-1848
Ved Chaudhary (NJ) (732) 972-1489
Padmini Prasad (NY) (845) 297-1668
Seema Khurana, (NY) (845) 227-8605
L. P. Sharma (NY) (315) 682-5742
Anchala Sobrin (NY) (845) 226-2542
Shyam Shukla (CA) (510) 770-1218
International Coordinator: Suresh Rituparna Ph: 81 422 226450

Chapter Directors

Bishan Agrawal, Marlboro (NJ) (732) 536-2688
Sharmishta Dutta, Wappinger Falls (NY) (845) 764-9014
Kamla P. Gupta, Chicago (IL) (847) 612-4244
Meena Rustgi Buffalo (NY) (716) 632-5768
Shukla Shah New York (NY) (718) 539-9729
Devendra Shukla, Fremont (CA) (510) 795-8217

हिन्दी जगत
प्रकाशन - जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर
Editorial Board
Chief Editor: Ram Chaudhari
54 Perry Hill Road, Oswego, NY 13126
Managing Editor: Prof. Suresh Rituparna
B-203, 2-16-1 Kichijoji, Higashhi-cho, Musashino-shi,
Tokyo 180-0002, Japan, Phone: 81-422-22-6450
Shyam Shukla
44949 Couger Circle, Fremont, CA 94539
Ph. (510) 770-1218
Mithilesh Sharma 3 B Vail Street, Norwalk, CT 06850
Ph. (203) 750-0728
Advisors
N. P. Kumar, B-30 Manas Apartments, Mayur Vihar
Phase I (Ext) Delhi, 110091, India
Phone: 011-91-112-271-8748
Prof. Ramakant Sharma 33 Tulip BunglowNo 2,
Near Surdhara Cir. Thaltej, Ahemdabad, 380 054

न्यास का लक्ष्य

विश्व में हिन्दी का बोध तथा प्रयोग

न्यास के उद्देश्य

1. स्कूलों, कालेजों तथा सामुदायिक शिक्षा संस्थानों में हिन्दी शिक्षण को प्रोत्साहन, तथा विश्वविद्यालयों में हिन्दीपीठों (Hindi Chairs) की स्थापना में योगदान

विश्व में हिन्दी का बोध तथा प्रयोग

2. हिन्दी को संयुक्तराष्ट्र की एक अधिकृत भाषा बनाने की दिशा में प्रयत्न
3. भारतीय संस्कृति में निहित मूल्यों का प्रचार

न्यास की सदस्यता

हर व्यक्ति जो न्यास के लक्ष्य तथा उद्देश्यों से सहमत है, न्यास का सदस्य बन सकता है। सदस्यता की दो श्रेणियां हैं -

1. सदस्य वार्षिक $25, विद्यार्थी $12 आजीवन $250
2. दाता सदस्य - इनकी पांच श्रेणियां हैं -

हिन्दी रत्न	$20,000 अथवा इससे अधिक
हिन्दी संरक्षक	$10,000 अथवा इससे अधिक
हिन्दी हितकारी	$5,000 अथवा इससे अधिक
हिन्दी मित्र	$2,500 अथवा इससे अधिक
हिन्दी शुभचिंतक	$1,000 अथवा इससे अधिक

अतिरिक्त अनुदान $_____

कृपया किसी एक श्रेणी पर निशान लगाइए, तथा प्रदीप अगरवाल (Treasurer) के पास चैक द्वारा भेजिए।

Name
Street
City State Zip code
Phone Numbers: Home Office
Email address Date:
Member's Signature

बाल हिन्दी जगत - सम्पादिका अंचला सोब्रिन
Subscription : $10 For Members, $15 to Non-members
Please Write Check to World Hindi Foundation & Send to:
Anchala Sobrin, 20 Presidential Way, Hopewell Junction.
NY 12533. Phone : (845) 226-254

विज्ञान प्रकाश
विश्व हिन्दी न्यास की वैज्ञानिक पत्रिका
मुख्य संपादक - राम चौधरी chaudhar@oswego.edu

Stamp

Return Address:
54 Perry Hill Road
Oswego, NY 13126